विषय - संस्कृत,
बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीय वर्ष, षष्ठ पत्र
व्याकरण एवं भाषा विज्ञान

डॉ० योग प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
दिनांक- 26/05/2020

भाषा की उत्पत्ति (पूर्व से आगे) क्रमशः

(3) **अनुकरण सिद्धान्त :-**

इस सिद्धान्त में अभी मूलतः यह धारणा काम कर रही है कि मनुष्य ने भाषा की उपलब्धि बाह्यतत्त्वों से प्राप्त की। प्रकृति के अनेक तत्त्वों- जड़ और चेतन की अनेकानेक ध्वनियां सुनकर और उनकी अवस्थाओं का अनुसरण करते हुए मनुष्य ने अपनी

Scanned with CamScanner

भाषा का निर्माण किया। कुत्ते - बिल्ली, गाय आदि की आवाजें सुनकर मानव ने तदनुरूप क्रियाओं और संज्ञाओं की रचना की। नदी के बहाव की और पत्ते के गिरने की ध्वनि सुनकर मनुष्य ने उनके अनुरूप भट्, भट् और पत् आदि शब्दों का प्रयोग प्रारम्भ किया। इस प्रकार के अनुकरण को वेद के आधार पर भाषा की उत्पत्ति मानने वाले विद्वानों ने अनुकरण सिद्धान्त, Imitative Theory, Onomatopoeic Theory अथवा Echoic Theory कहा है। प्राच्यापक मैक्स मूलर ने इसे मजाक में Bow Bow - Theory, अर्थात् कुत्ते के भौंकने के आधार पर भौं-भौं सिद्धान्त कहा है। पॉल, हर्डर, हिले आदि भाषाविदों ने इस सिद्धान्त को माना है। पर रेनन ने इस सिद्धान्त का घोर विरोध किया है। इनकी मुख्य आपत्ति यह है कि भाषा सदृश अत्यन्त सूक्ष्म उपकरण के आविष्कारक बुद्धिमान मनुष्य ने भाषा को निर्जीव पदार्थों अथवा पशुपक्षियों से सीखा होगा - यह सम्भव ही नहीं है। इस सिद्धान्त के विरुद्ध दूसरी आपत्ति यह भी की जाती है कि यदि यह सिद्धान्त मान भी लें तो भी इसकी सहायता से बनने वाले शब्द भाषा के एक या दो प्रतिशत अंश की ही पूर्ति करते हैं। सम्पूर्ण भाषा की उत्पत्ति का समाधान इस सिद्धान्त से नहीं हो पाता। फिर अनुकरण के आधार पर बनने वाले शब्द सभी भाषाओं में एक से क्यों नहीं हैं - इस प्रश्न का उत्तर भी इस सिद्धान्त से प्राप्त नहीं होता।

Scanned with CamScanner

(५) मनोभावाभिव्यक्ति सिद्धान्त :-

भाषा की उत्पत्ति के प्रश्न का समाधान करने के लिए जिन सिद्धान्तों की स्थापना की गई है उनका वर्गीकरण तीन प्रकार से हो सकता है। पहले वर्ग में दैवी उत्पत्ति सिद्धान्त आता है जिसमें भाषा की उत्पत्ति का स्रोत इहलोक से दूर किसी अदृश्य शक्ति में ढूँढने का प्रयास किया गया है। दूसरे वर्ग में धातु-सिद्धान्त और अनुकरण सिद्धान्त को रख सकते हैं जिसमें मनुष्य के इस सशक्त उपकरण की उत्पत्ति प्राकृतिक पदार्थों में ढूँढी गई है। तीसरे वर्ग में हम जिन सिद्धान्तों को रखना चाहते हैं वह वर्ग मनुष्य के आसपास रहकर इस समस्या का समाधान ढूँढता है। इस वर्ग में हम मनोभावाभिव्यक्ति सिद्धान्त, श्रमध्वनि सिद्धान्त, सम्पर्क सिद्धान्त आदि को रख सकते हैं। संक्षेप में, भाषा की उत्पत्ति के समाधान का सम्बन्ध क्रमशः दैवी जगत, प्रकृति और मानव के साथ जोड़कर देखा जाता रहा है।

मनोभावाभिव्यंजकवाद को अंग्रेजी में Pooh Pooh Theory या Interjectional Theory भी कहा जाता है। इस सिद्धान्त में भाषा की उत्पत्ति को मानव के मनोभावों के साथ जोड़कर देखा गया है। ऐसा माना गया है कि यद्यपि मनुष्य विचारशील प्राणी है तथापि प्रारम्भिक काल में उसमें मनोभावों की ही प्रधानता थी। विभिन्न प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न होने पर मनुष्य

Scanned with CamScanner

स्वयमेव सहज रूप से क्रोध, प्रेम, करुणा, प्रसाद, आश्चर्य दुःख आदि को अभिव्यक्त करने के लिए आह, ओह, अहो, धिक् आदि अनेक प्रकार की अभिव्यंजक ध्वनियाँ निकाला करता था जिनसे भाषा की उत्पत्ति हुई। पर सिद्धान्त में सबसे बड़ी कमी यही है कि इस प्रकार के मनोभावाभिव्यंजक शब्द भाषा में होते ही कितने हैं? अब इस सिद्धान्त में भाषा की उत्पत्ति सदृश सम्पूर्ण प्रश्न का सम्पूर्ण समाधान प्राप्त नहीं होता। इति।

Scanned with CamScanner